International Journal of Science, Strategic Management and Technology
Volume **02** Issue **03** March-**2026** | ISSN: **3108-1762 (Online)** | Impact Factor: 3.8
An International, Peer-Reviewed, Open Access Scholarly Journal Indexed in recognized academic databases

OPEN ACCESS

राष्ट्र-निर्माण में गाँव की भूमिका : गांधी और नेहरू की दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

1.अलका कुमारी
शोधार्थी,
स्नातकोत्तर गांधी विचार विभाग,
ति. माँ. भा. वि. वि. भागलपुर, बिहार -07
2. डॉ. उमेश प्रसाद नीरज
सहायक प्राध्यापक,
स्नातकोत्तर गांधी विचार विभाग ,
ति.मां.भा.वि.वि. भागलपुर बिहार -07

https://doi.org/ 10.55041/ijsmt.v2i3.054

Cite this Article: कुमारी, ᪖. (2026). राष्ट्र-निर्माण में गाँव की भूमिका : गांधी और नेहरू की दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन. International Journal of Science, Strategic Management and Technology, *02*(03). https://doi.org/10.55041/ijsmt.v2i3.054

License: This article is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author(s) and source are properly credited.

▪ शोध सार (Abstract) :

प्रस्तुत शोध आलेख “राष्ट्र-निर्माण में गाँव की भूमिका: गांधी और नेहरू की दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन” भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा को ग्राम-केंद्रित परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करता है। इसमें यह प्रतिपादित किया गया है कि राष्ट्र केवल राजनीतिक सत्ता-संरचना नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक प्रक्रियाओं का समेकित परिणाम है, जिसकी जड़ें भारतीय ग्राम-व्यवस्था में निहित रही हैं। यह शोध आलेख राष्ट्र की आधुनिक अवधारणा को साझा चेतना और सामूहिक अनुभव से निर्मित मानते हुए ग्राम को सामाजिक संगठन की मूल इकाई के रूप में रेखांकित करता है। अध्ययन का मुख्य फोकस गांधी और नेहरू की ग्राम-दृष्टियों का तुलनात्मक विश्लेषण है। गांधी ने ‘ग्राम स्वराज’ को नैतिक आत्मशुद्धि, विकेंद्रीकरण, कुटीर उद्योग और आत्मनिर्भरता पर आधारित आदर्श लोकतांत्रिक संरचना के रूप में देखा। उनके लिए स्वराज व्यक्तिगत नैतिकता से प्रारंभ होकर सामुदायिक स्वशासन में परिणत होता है। दूसरी ओर, नेहरू ने ग्रामीण भारत को आधुनिक

© Author(s). This work is peer-reviewed, openly published, and permanently archived
This article is openly accessible and reusable with proper attribution.

वैज्ञानिक, औद्योगिक और योजनाबद्ध विकास की आधारभूमि माना। उन्होंने सामुदायिक विकास कार्यक्रम, पंचायती राज और कृषि-आधारित नीतियों के माध्यम से ग्राम-उत्थान को राष्ट्रीय प्रगति से जोड़ा।

यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि दोनों दृष्टियों में भिन्नता के बावजूद उनका लक्ष्य समान था—समतामूलक और सशक्त भारत का निर्माण। गांधी शोषणकारी पूंजीवाद और ग्राम-समाज की कुरीतियों दोनों के आलोचक थे, जबकि नेहरू ने आधुनिकता को मानवीय मूल्यों से जोड़ने का प्रयास किया। समकालीन संदर्भ में उपभोक्तावाद, ग्रामीण-शहरी असमानता और नैतिक अवमूल्यन जैसी चुनौतियों के बीच यह अध्ययन गांधी और नेहरू के विचारों के समन्वित पुनर्पाठ की आवश्यकता पर बल देता है, ताकि विकास और सामाजिक न्याय के बीच संतुलन स्थापित किया जा सके। "राष्ट्र की अवधारणाएं पूरे इतिहास में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विन्यास में मौलिक रही है। मौलिक सामाजिक निर्माणों के रूप में, राष्ट्र और गाँव—दोनों शब्दों के अर्थ केवल उनकी भौगोलिक या प्रशासनिक सीमाओं तक सीमित नहीं हैं। इनकी अवधारणा अधिक सूक्ष्म और व्यापक है, जो सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक मूल्यों और सामुदायिक जीवन की गहरी अनुभूतियों को भी अभिव्यक्त करती है।"[1.]

▪ **मुख्य शब्द (Key Word's):** राष्ट्र-निर्माण, ग्राम स्वराज, विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्भरता, ग्रामीण विकास, आधुनिक राष्ट्रवाद, सामुदायिक सहभागिता, पंचायती राज, सामाजिक न्याय, योजनाबद्ध विकास

▪ राष्ट्र-निर्माण में गाँव की भूमिका : गांधी और नेहरू की दृष्टि :

राष्ट्र की अवधारणा आधुनिक राज्य के निर्माण तथा उसके आधुनिकीकरण की ऐतिहासिक प्रक्रिया के साथ क्रमशः विकसित हुई है। यह विचार विशेष रूप से तब उभरा जब राजनीतिक संस्थाएँ, प्रशासनिक ढाँचे और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन एक संगठित राज्य व्यवस्था के रूप में आकार लेने लगे। "बेनेडिक्ट एंडरसन (1983) ने राष्ट्र को "कल्पित समुदाय" के रूप में परिभाषित करते हुए बताया कि राष्ट्र साझा चेतना से निर्मित होता है, जो ग्राम-आधारित सामाजिक संरचनाओं से भी प्रभावित होता है।"[2.] यह दृष्टिकोण इंगित करता है कि राष्ट्र सामूहिक धारणाओं और एकता की भावना से बनते हैं, जो स्थानीय संबद्धताओं से परे होती है। इसके विपरीत "मानव-विज्ञानी क्लिफोर्ड गीर्ट्ज (1963) द्वारा

© Author(s). This work is peer-reviewed, openly published, and permanently archived
This article is openly accessible and reusable with proper attribution.

International Journal of Science, Strategic Management and Technology
Volume **02** Issue **03** March-**2026** | ISSN: **3108-1762 (Online)** | Impact Factor: 3.8
An International, Peer-Reviewed, Open Access Scholarly Journal Indexed in recognized academic databases

स्थानीय सांस्कृतिक संरचनाओं को सामाजिक संगठन की आधारशिला माना गया, जो ग्राम जीवन की वैचारिक समझ को पुष्ट करती है। गांव अक्सर सामाजिक विश्लेषण की मूलभूत इकाई के रूप में कार्य करता है जो सामुदायिक संबद्धता और सांस्कृतिक निरंतरता के प्रति ऐतिहासिक दृष्टिकोण को प्रकट करता है क्योंकि वे व्यापक राष्ट्रीय आख्यानों को प्रभावित करते हैं।"**3.**

भारत जैसे बहुस्तरीय, बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक देश में राष्ट्र-निर्माण मात्र एक राजनीतिक प्रक्रिया नहीं है बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक तत्वों की एक दीर्घकालीन समेकित यात्रा भी है। भारतीय राष्ट्र की निर्मिती सदियों से गांव में निहित रही है। गांव न केवल उत्पादन और आजीविका के केंद्र रहे हैं बल्कि भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक और सामुदायिक परंपराओं के मूल वाहक भी रहे हैं। इस कारण राष्ट्र और ग्राम के परस्पर संबंध का अध्ययन भारतीय राजनीति, समाजशास्त्र, इतिहास, संस्कृति तथा विकास अध्ययन इन सभी क्षेत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारतीय सभ्यता का विकास मूलतः ग्राम केंद्रित रहा है। प्राचीन वैदिक साहित्य, बौद्ध विनय-पिटक, अर्थशास्त्र, रामायण, महाभारत, पुराणों से लेकर मध्यकालीन भक्ति-सूफी परंपराएं और आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन तक 'ग्राम' को सामाजिक संगठन की मूल इकाई माना गया है। प्राचीन भारत में ग्राम प्रणाली 'जनपद' और 'महाजनपद' का आधार थी। मध्यकाल में भी आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के केंद्र में ग्रामीण समुदाय थे। आधुनिक युग में गांधी ने भारतीय गांवों को 'राष्ट्र की आत्मा' कहा। नेहरू ने ग्रामीण भारत को आधुनिक विकास की अनिवार्य नींव माना, किंतु वैज्ञानिक-औद्योगिक दृष्टि के साथ। इस प्रकार राष्ट्र और गांव की अवधारणा का संबंध ऐतिहासिक रूप से भी गहरा है और आधुनिकता के साथ इसमें निरंतर परिवर्तन हुआ है। "नेहरू ने ग्रामीण भारत को आधुनिक वैज्ञानिक और योजनाबद्ध विकास की केंद्रीय आधारभूमि के रूप में देखा।"**4.**

जवाहरलाल ने अपनी पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इंडिया (1946) में गांधी का जो जिक्र किया है, उसमें महात्मा गांधी की शुरुआती दिनों में राष्ट्रीय आंदोलन में उभरती हुई केन्द्रीयता का एक स्पष्ट चित्र उभरता है। नेहरूवादी औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप ग्रामीण-शहरी प्रवासन की प्रक्रिया और उसके सामाजिक प्रभावों का तुलनात्मक विवेचन

© Author(s). This work is peer-reviewed, openly published, and permanently archived
This article is openly accessible and reusable with proper attribution.

जोड़ा जा सकता है। इस विमर्श में राष्ट्रवाद बनाम साम्राज्यवाद श्रमिक वर्ग एवं मध्यम वर्ग की बेबसी के संदर्भ में गांधी के आगमन की चर्चा जवाहरलाल नेहरू ने निम्नलिखित शब्दों में की है- प्रथम महायुद्ध में बंगाल के जूट मिलों और मुंबई के सूती मिलों और उनके मालिकों को 100 से 200% तक का फायदा पहुंचाया था, पर आम आदमी और मजदूरों की हालत इतनी खराब थी कि ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के एक प्रतिनिधिमंडल ने असम के चाय बागानों का वर्णन करते हुए कहा कि श्रमिकों का भोजन इतना अस्वास्थ्यकर और अपर्याप्त था कि चूहे भी उसे खाकर पाँच हफ्ते से ज्यादा जी नहीं सकते थे। यह रपट ट्रेड यूनियन प्रतिनिधिमंडल को बंगाल के स्वास्थ्य विभाग से मिली थी।

गांधी और जवाहरलाल की उम्र में 20 साल का अंतर था, लेकिन यहीं तक नहीं, जवाहरलाल अपने लंदन शिक्षा प्रवास के दिनों में फेबियन समाजवाद से प्रभावित थे। ऑस्कर वाइल्ड से लेकर बर्नार्ड शॉ उनके संदर्भ बिंदु थे। आयरिश साम्राज्य-विरोधी आंदोलन से वे हिंदुस्तानी संघर्ष के लिए सबक लेना चाहते थे। जवाहरलाल विज्ञान और मानवतावाद को अपने जीवन का मूल आधार मानते थे, उसी जवाहरलाल ने एक संतनुमा व्यक्तित्व के अधिकारी जिनकी दुनिया परिभाषित होती थी- उपवास, अंतर्मन की यात्रा, प्रार्थना एवं चरखा से, आखिर ऐसे व्यक्ति के सामने उन्होंने समर्पण कैसे किया ? ब्रिटिश इतिहासविद परसीवियल स्पेयर का कहना था कि जवाहरलाल को मूलतः एक अभिभावक चाहिए था। "रामचन्द्र गुहा ने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू की विकास संबंधी दृष्टियों को एक-दूसरे के पूरक के रूप में देखा है। उनके अनुसार भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक जड़ें ग्रामीण समाज में निहित हैं, जहाँ स्थानीय स्तर पर लोगों की सक्रिय भागीदारी, सामुदायिक सहयोग और स्वशासन की परंपराएँ मिलकर लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ आधार प्रदान करती हैं।"[5.]

डिस्कवरी ऑफ इंडिया में जवाहरलाल ने पूरे विश्व इतिहास और भारतीय इतिहास के पन्नों को पार करते हुए गांधी पर आए हैं जिसने उनकी आंखों पर बंधी पट्टी खोल दी और वे एक स्वच्छ हवा के झोंके में श्वास ले पाए। इतिहास प्रदीक्षणा के बाद निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए नेहरू इतिहास को उलट-पुलटकर चंद्रगुप्त मौर्य से लेकर अशोक प्रियदर्शी और अकबर तक, भारत से लेकर चीन और भारत से लेकर एबीसीनिया तक और फिर अपने जीवन, मिथक, कालिदास साहित्य, संस्कृति और प्रदक्षिणा करते हुए निष्कर्ष वाले अध्याय में वे गांधी तक पहुंचते हैं।

© Author(s). This work is peer-reviewed, openly published, and permanently archived
This article is openly accessible and reusable with proper attribution.
https://ijsmt.org/ , Email: editor@ijsmt.org

International Journal of Science, Strategic Management and Technology
Volume 02 Issue 03 March-2026 | ISSN: 3108-1762 (Online) | Impact Factor: 3.8
An International, Peer-Reviewed, Open Access Scholarly Journal Indexed in recognized academic databases

दरअसल महात्मा और जवाहरलाल नेहरू दोनों ही सत्यानवेषी थे। एक उम्र में कम इतिहास भाषा के माध्यम से भारत के सच और बदलाव वाले भविष्य यात्रा के बारे में खोजबीन रहा था, तो दूसरा उम्र में ज्येष्ठ उपवास, आश्रम, आंदोलन, परंपरा और आम आदमी के बोध 'कॉमन सेंस' के माध्यम से इस उपमहाद्वीपीय सभ्यता को सत्य की परख से जांचना चाहता था। जवाहरलाल 'भारतीय राष्ट्रवाद' की यात्रा पर थे, यही बिंदु था जो महात्मा गांधी और जवाहरलाल को मिलाती थी।

"एम. श्रीनिवास ने भारतीय ग्राम को सामाजिक परिवर्तन और 'संस्कृतिकरण' की प्रक्रिया का प्रयोगशाला कहा।"[6.] 'भारतीय राष्ट्रवाद' पर अभी तक की बहस में जवाहरलाल को महज (राष्ट्रवाद का प्राच्य इतिहास या रिसीव्ड हिस्ट्री) के लाभार्थी के रूप में दर्शाया गया है। यह सत्य से परे है- नेहरू ने 19 वीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण से लेकर दादा भाई नौरोजी, गोखले के उदारतावाद और बंकिम, तिलक, मालवीय, अरविंदो घोष, राजगोपालाचारी, मोहम्मद इकबाल के सांस्कृतिक प्रतिवादी एक्स्लुसिविज्म (बहिष्करण) को अतिक्रमित करते हुए राष्ट्रवाद के बहस को आगे बढ़ाया है।

'आधुनिक राष्ट्रवाद और उसकी रणनीति' को पहली बार गढ़ा गांधी ने, जब उन्होंने 1921 में सहयोग और खिलाफत के संयुक्त आंदोलन का बीड़ा उठाया। उन्होंने 1922 में कांग्रेस संगठन का लोकतांत्रिक ढांचा बनाया, खिलाफत और हिंदू-मुस्लिम एकता का आधार रखा और साम्राज्य की वैकल्पिकी बनाने के लिए एक क्रांतिकारी संगठन, संविधान और सैद्धांतकी को गांधी ने इस दौर में गढ़ा, यही 'आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद' की पहली सीढ़ी थी। "1857 भारतीय राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि तो बनाती है, पर संरचना का अभाव पूरा नहीं कर पाती थी। कोठारी ने भारतीय लोकतंत्र की जड़ों को ग्राम-आधारित सत्ता-संरचनाओं से जोड़ा।"[7.] बहादुर शाह का मुगलिया तंत्र और मराठे पेशवाई सरकारों के साझा-तंत्र में कितना 'नया आधुनिक राष्ट्रवाद' का पुख्ता संरचना बन पाता, यह एक प्रश्न चिन्ह रह जाएगा। 1921 के बाद 1930 के दशक में जवाहरलाल आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के उभरते हुए शिल्पी बन जाते।

"गोपाल कृष्ण ने नेहरूवादी विकास मॉडल को ग्रामीण पुनर्गठन की आधुनिक परियोजना के रूप में देखा।"[8.] आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का विश्लेषण और उसकी शुरुआती नींव गांधी ने ही रखा और नेहरू ने उस व्याख्या को आधुनिक देश निर्माण के सैद्धांतिक कार्यान्वयन में बदल दिया। गांधी ने 1921 में स्वराज की व्याख्या करते हुए कहा था कि स्वराज के लिए आंदोलन आत्म-शुद्धि का आंदोलन है। जनता के स्वराज का अर्थ है- 'व्यक्तियों के स्वराज का जोड़' यही स्वराज

© Author(s). This work is peer-reviewed, openly published, and permanently archived
This article is openly accessible and reusable with proper attribution.

को परिभाषित करता है। गांधी-नेहरू विचारधारा और अध्ययन की आवश्यकता गांधी और नेहरू दोनों की राष्ट्र दृष्टि में गांव की भूमिका केंद्रीय थी, किंतु उनके दृष्टिकोण भिन्न थे। एक और गांधी विकेंद्रीकृत, नैतिक, आत्मनिर्भर ग्राम स्वराज मॉडल के पैरोकार थे, वहीं नेहरू आधुनिक, वैज्ञानिक, योजनाबद्ध, प्रगतिवादी, ग्रामीण विकास मॉडल के हिमायती थे। इन दोनों दृष्टियों के तुलनात्मक अध्ययन से ग्राम-राष्ट्र संबंध की गहरी समझ विकसित होगी। “बिपिन चंद्रा ने राष्ट्रीय आंदोलन को जन-आधारित प्रक्रिया बताते हुए ग्रामीण सहभागिता की निर्णायक भूमिका स्वीकार की।”[9]

ग्रामीण अर्थशास्त्र के चार पहलुओं ग्राम विकास, कृषि उत्पादन, भूमि सुधार और कुटीर उद्योग को गांधी ने भी स्पर्श किया और जवाहरलाल नेहरू ने भी। जवाहरलाल ने उससे ग्रामीण विकास की व्यापक रणनीति बनाई। इस दिशा में ग्राम विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य के लिए सामुदायिक विकास योजना जवाहरलाल का शुरुआती कदम था। यह ग्रामीण भारत के सर्वांगीण विकास के लिए नेहरू का महत्वपूर्ण कदम था। कृषि उत्पादन में हरित क्रांति नेहरू की मृत्यु के बाद घटित हुई। ग्रामीण भारत में बुनियादी इंकलाब जवाहरलाल की प्रथम वरीयता रही है। ग्रामीण आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकीकरण के बीच संभावित तनाव को राजनीतिक एकता बनाम स्थानीय स्वायत्तता के द्वंद्व के रूप में विश्लेषित किया जा सकता है।

गांधी पूंजीवादी शोषण के खिलाफ थे। गांधी गांव के शोषण का मुख्य कारण शहर या पूंजीवादी औद्योगीकरण के दुनिया में देखते थे। ऐसे शोषण को स्वाभाविक रूप से वे हिंसा मानते थे। “चटर्जी ने उपनिवेशोत्तर राष्ट्रवाद को ‘आंतरिक क्षेत्र’ की अवधारणा से जोड़ते हुए ग्राम समाज को सांस्कृतिक प्रतिरोध का केंद्र बताया।”[10] “गांधी की ग्राम-केंद्रित दृष्टि को आधुनिक औद्योगिक सभ्यता की आलोचना के रूप में व्याख्यायित किया गया।”[11] गांधी गांव को लेकर केवल यूटोपियाई आदर्श का ध्रुव तारा नहीं मानते थे। वे गांव की कमजोरीयों से भी परिचित थे। वस्तुत: उनका गांव, जिसे वे भारतीय जनतंत्र का मुख्य इकाई बनाना चाहते थे, वह आदर्श गांव या भविष्य का गांव था। उनके सामने जीता-जागता गांव को वह कमजोर, अनिक्छुक, अपरिवर्तनशील लोगों का जमाबड़ा ही मानते थे। गांधी और नेहरू की ग्राम-दृष्टि को “राष्ट्र-निर्माण की वैकल्पिक अवधारणाओं” के रूप में रखते हुए यह प्रश्न जोड़ा जा सकता है कि क्या दोनों मॉडल परस्पर पूरक थे या प्रतिस्पर्धी वैचारिक प्रतिमान।

© Author(s). This work is peer-reviewed, openly published, and permanently archived
This article is openly accessible and reusable with proper attribution.

ग्राम को राष्ट्र-निर्माण की आधारभूत इकाई के रूप में स्थापित करते समय यह मान लेना पर्याप्त नहीं है कि वह स्वाभाविक रूप से सामंजस्यपूर्ण और न्यायपूर्ण सामाजिक संरचना का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय ग्राम-समाज ऐतिहासिक रूप से बहुस्तरीय सत्ता-संबंधों, जातिगत पदानुक्रम, लैंगिक असमानताओं और संसाधनों के असंतुलित वितरण से निर्मित रहा है। अतः ग्राम-स्वराज की अवधारणा का सम्यक मूल्यांकन तभी संभव है जब इन अंतर्निहित संरचनात्मक यथार्थों को विश्लेषण का हिस्सा बनाया जाए। स्थानीय स्वायत्तता कभी-कभी लोकतांत्रिक सहभागिता को सशक्त करती है, परंतु वह परंपरागत प्रभुत्व-समूहों को भी वैधता प्रदान कर सकती है।

इसी प्रकार, आधुनिक राष्ट्र-राज्य की विकास-परियोजनाओं ने ग्राम-राजनीति को नए प्रशासनिक ढाँचे और संसाधन-प्रबंधन की प्रक्रियाओं से जोड़ा। योजनाबद्ध विकास और पंचायती संस्थाओं के विस्तार ने ग्रामीण नेतृत्व के नए रूपों को जन्म दिया, किन्तु यह भी देखा गया कि सत्ता का विकेंद्रीकरण हमेशा सामाजिक समावेशन की गारंटी नहीं बन पाया। कई संदर्भों में स्थानीय राजनीति ने जाति और वर्ग आधारित ध्रुवीकरण को और अधिक स्पष्ट कर दिया। इस परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र-निर्माण का प्रश्न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता या औद्योगिक प्रगति का नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय की संरचनात्मक स्थापना का भी है। ग्राम-राजनीति को सहभागी लोकतंत्र, सामाजिक उत्तरदायित्व और पारदर्शिता के सिद्धांतों से जोड़कर ही वह राष्ट्र की सुदृढ़ आधारशिला बन सकती है। अतः आवश्यक है कि ग्राम-दृष्टि को आदर्शवादी विमर्श से आगे बढ़ाकर सामाजिक शक्ति-संतुलन, प्रतिनिधित्व और समान अवसरों के यथार्थ के साथ जोड़ा जाए।

इसी प्रकार, नेहरूवादी विकास-दृष्टि में भी ग्राम को आधुनिकता के विस्तार-क्षेत्र के रूप में देखा गया, परंतु यह पर्याप्त रूप से विश्लेषित नहीं हुआ कि औद्योगिकीकरण और योजनाबद्ध विकास ने ग्रामीण सांस्कृतिक ताने-बाने, पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियों और सामुदायिक संबंधों पर क्या प्रभाव डाला। राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया केवल आर्थिक उन्नयन नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पुनर्संरचना की भी प्रक्रिया है।

© Author(s). This work is peer-reviewed, openly published, and permanently archived
This article is openly accessible and reusable with proper attribution.

International Journal of Science, Strategic Management and Technology
Volume **02** Issue **03** March-**2026** | ISSN: **3108-1762 (Online)** | Impact Factor: 3.8
An International, Peer-Reviewed, Open Access Scholarly Journal Indexed in recognized academic databases

- **निष्कर्ष :**

गांधी और नेहरू दोनों ने गाँव को राष्ट्र की आधारशिला माना, किंतु उनकी कार्यपद्धति और दृष्टिकोण में अंतर स्पष्ट है। गांधी का 'ग्राम स्वराज' विकेंद्रीकरण, नैतिक आत्मशुद्धि, कुटीर उद्योग और आत्मनिर्भरता पर आधारित था, जिसमें लोकतंत्र की जड़ें स्थानीय समुदाय में स्थापित होती हैं। इसके विपरीत, नेहरू ने वैज्ञानिक सोच, औद्योगिक विकास और योजनाबद्ध कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण उत्थान को राष्ट्रीय प्रगति से जोड़ा । यह दुर्भाग्य की ही बात है कि गांधी के मृत्यु के बाद कुछ लोगों ने गांधी के कथनों की गलत व्याख्या करके उनके ग्राम स्वराज की कल्पना का दुरुपयोग कर एक पिछड़ी राजनीति को जन्म दे दिया। दरअसल गांधी को सीधे-सीधे गांव बनाम शहर विमर्श में डालना पूरी तरह से सत्यपरक नहीं होगा। गांधी शहरी पूंजीवाद औद्योगिकरण व्यापारिक वर्चस्व के जिस प्रकार से आलोचक थे, उसी प्रकार दूसरी ओर गांव-समाज में फैले कुरीतियों के भी उतने ही मुखर आलोचक थे। भारतीय राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए गाँव की भूमिका को केंद्र में रखना अनिवार्य है। भारत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना मूलतः ग्राम-आधारित रही है; अतः राष्ट्र की अवधारणा यहाँ केवल राज्य-सत्ता की परिधि में सीमित नहीं, बल्कि सामुदायिक जीवन, नैतिक मूल्यों और स्थानीय स्वायत्तता से गहराई से जुड़ी है । फिर भी, इन दोनों दृष्टियों को परस्पर विरोधी मानना उचित नहीं होगा। वस्तुतः गांधी की नैतिकता और नेहरू की आधुनिकता भारतीय राष्ट्र-निर्माण के दो पूरक आयाम हैं। एक ओर नैतिक-सामाजिक आधार के बिना विकास यांत्रिक और असंतुलित हो सकता है, तो दूसरी ओर वैज्ञानिक दृष्टि और संरचनात्मक सुधारों के बिना ग्राम-आधारित आदर्श व्यावहारिक रूप नहीं ले सकते। समकालीन भारत में जब ग्रामीण-शहरी असमानता, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक विषमताएँ नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रही हैं, तब गांधी के नैतिक ग्राम स्वराज और नेहरू के योजनाबद्ध विकास मॉडल का समन्वित पुनर्पाठ अधिक प्रासंगिक हो जाता है। अतः संतुलित राष्ट्र-निर्माण के लिए आवश्यक है कि नैतिकता, लोकतांत्रिक सहभागिता और वैज्ञानिक प्रगति—इन तीनों का सामंजस्य स्थापित किया जाए, ताकि गाँव और राष्ट्र के बीच संबंध सुदृढ़ एवं न्यायपूर्ण बन सके।नए रूपों को जन्म दिया, किन्तु यह भी देखा गया कि सत्ता का विकेंद्रीकरण हमेशा सामाजिक समावेशन की गारंटी नहीं बन पाया। कई संदर्भों में स्थानीय राजनीति ने जाति और वर्ग आधारित ध्रुवीकरण को और अधिक स्पष्ट कर दिया। इस परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र-निर्माण का प्रश्न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता या औद्योगिक प्रगति का नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय की संरचनात्मक स्थापना का भी है। ग्राम-राजनीति को सहभागी लोकतंत्र, सामाजिक

© Author(s). This work is peer-reviewed, openly published, and permanently archived
This article is openly accessible and reusable with proper attribution.

उत्तरदायित्व और पारदर्शिता के सिद्धांतों से जोड़कर ही वह राष्ट्र की सुदृढ़ आधारशिला बन सकती है। अतः आवश्यक है कि ग्राम-दृष्टि को आदर्शवादी विमर्श से आगे बढ़ाकर सामाजिक शक्ति-संतुलन, प्रतिनिधित्व और समान अवसरों के यथार्थ के साथ जोड़ा जाए।

इसी प्रकार, नेहरूवादी विकास-दृष्टि में भी ग्राम को आधुनिकता के विस्तार-क्षेत्र के रूप में देखा गया, परंतु यह पर्याप्त रूप से विश्लेषित नहीं हुआ कि औद्योगिकीकरण और योजनाबद्ध विकास ने ग्रामीण सांस्कृतिक ताने-बाने, पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियों और सामुदायिक संबंधों पर क्या प्रभाव डाला। राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया केवल आर्थिक उन्नयन नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पुनर्संरचना की भी प्रक्रिया है।

- **निष्कर्ष :**

गांधी और नेहरू दोनों ने गाँव को राष्ट्र की आधारशिला माना, किंतु उनकी कार्यपद्धति और दृष्टिकोण में अंतर स्पष्ट है। गांधी का 'ग्राम स्वराज' विकेंद्रीकरण, नैतिक आत्मशुद्धि, कुटीर उद्योग और आत्मनिर्भरता पर आधारित था, जिसमें लोकतंत्र की जड़ें स्थानीय समुदाय में स्थापित होती हैं। इसके विपरीत, नेहरू ने वैज्ञानिक सोच, औद्योगिक विकास और योजनाबद्ध कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण उत्थान को राष्ट्रीय प्रगति से जोड़ा । यह दुर्भाग्य की ही बात है कि गांधी के मृत्यु के बाद कुछ लोगों ने गांधी के कथनों की गलत व्याख्या करके उनके ग्राम स्वराज की कल्पना का दुरुपयोग कर एक पिछड़ी राजनीति को जन्म दे दिया। दरअसल गांधी को सीधे-सीधे गांव बनाम शहर विमर्श में डालना पूरी तरह से सत्यपरक नहीं होगा। गांधी शहरी पूंजीवाद औद्योगिकरण व्यापारिक वर्चस्व के जिस प्रकार से आलोचक थे, उसी प्रकार दूसरी ओर गांव-समाज में फैले कुरीतियों के भी उतने ही मुखर आलोचक थे। भारतीय राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए गाँव की भूमिका को केंद्र में रखना अनिवार्य है। भारत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना मूलतः ग्राम-आधारित रही है; अतः राष्ट्र की अवधारणा यहाँ केवल राज्य-सत्ता की परिधि में सीमित नहीं, बल्कि सामुदायिक जीवन, नैतिक मूल्यों और स्थानीय स्वायत्तता से गहराई से जुड़ी है । फिर भी, इन दोनों दृष्टियों को परस्पर विरोधी मानना उचित नहीं होगा। वस्तुतः गांधी की नैतिकता और नेहरू की आधुनिकता भारतीय राष्ट्र-निर्माण के दो पूरक आयाम हैं। एक ओर नैतिक-सामाजिक आधार के बिना विकास यांत्रिक और असंतुलित हो सकता है, तो दूसरी ओर वैज्ञानिक दृष्टि और संरचनात्मक सुधारों के बिना ग्राम-

© Author(s). This work is peer-reviewed, openly published, and permanently archived
This article is openly accessible and reusable with proper attribution.

International Journal of Science, Strategic Management and Technology
Volume **02** Issue **03** March-**2026** | ISSN: **3108-1762 (Online)** | Impact Factor: 3.8
An International, Peer-Reviewed, Open Access Scholarly Journal Indexed in recognized academic databases

आधारित आदर्श व्यावहारिक रूप नहीं ले सकते। समकालीन भारत में जब ग्रामीण-शहरी असमानता, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक विषमताएँ नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रही हैं, तब गांधी के नैतिक ग्राम स्वराज और नेहरू के योजनाबद्ध विकास मॉडल का समन्वित पुनर्पाठ अधिक प्रासंगिक हो जाता है। अतः संतुलित राष्ट्र-निर्माण के लिए आवश्यक है कि नैतिकता, लोकतांत्रिक सहभागिता और वैज्ञानिक प्रगति—इन तीनों का सामंजस्य स्थापित किया जाए, ताकि गाँव और राष्ट्र के बीच संबंध सुदृढ़ एवं न्यायपूर्ण बन सके।

- **संदर्भ ग्रंथ सूची :**

1. Nehru, Jawaharlal. Discovery of India, First Published Calcutta Signet Press, 1946 and Teen-Murti House New Delhi, Nehru Memorial Fund 1994, P. 357
2. एंडरसन, बी. (1983). Imagined communities: Reflections on the origin and spread of nationalism (pp. 6–7). लंदन: वर्सो।
3. गीर्ट्ज़, सी. (1963). Old societies and new states (pp. 105–110). न्यूयॉर्क: फ्री प्रेस।
4. नेहरू, जे. (1946). The discovery of India (pp. 510–515). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. गुहा, आर. (2007). India after Gandhi (pp. 102–110). नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स।
6. श्रीनिवास, एम. एन. (1966). Social change in modern India (pp. 112–118). बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
7. कोठारी, आर. (1970). Politics in India (pp. 156–162). नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन।
8. कृष्णा, जी. (1964). Development and democracy in India (pp. 88–96). मुंबई: एशिया पब्लिशिंग हाउस।
9. चंद्र, बी. (1989). India's struggle for independence (pp. 248–255). नई दिल्ली: पेंगुइन।

© Author(s). This work is peer-reviewed, openly published, and permanently archived
This article is openly accessible and reusable with proper attribution.
https://ijsmt.org/ , Email: editor@ijsmt.org

10. चटर्जी, पी. (1993). The nation and its fragments (pp. 5–13). प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

11. नंदी, ए. (1983). The intimate enemy (pp. 3–15). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

* * *